बच्चों के

लेनिन

ISBN 978-81-89719-16-6

मूल्य : 35 रुपये
पहला संस्करण: जनवरी 2014

प्रकाशक
अनुराग ट्रस्ट
डी–68, निरालानगर
लखनऊ–226020

टाइपसेटिंग : कम्प्यूटर प्रभाग, राहुल फाउण्डेशन
मुद्रक : क्रिएटिव प्रिण्टर्स, 628/एस–28, शक्तिनगर, लखनऊ

व्लादिमिर इल्यीच लेनिन

कमरे की दीवार पर एक पोर्ट्रेट टंगा हुआ है।
वास्या ने अपने पिता से पूछा:

— पिताजी, मुझे इनके बारे में कुछ बताइए।
— क्या तुम जानते हो कि ये कौन हैं?
— हाँ मैं जानता हूं। ये लेनिन हैं।
— हाँ, ये हैं व्लादिमिर इल्यीच लेनिन। हमारे पसंदीदा और प्रिय नेता।

तो ठीक है, मैं तुम्हें इनके बारे में बताता हूं। उस समय मैं छोटा था। तब मज़दूरों का जीवन दयनीय हुआ करता था। काम करना कठिन था। हम सुबह से लेकर देर रात तक काम किया करते थे और हम में से बहुत से लोग एक ही कारखाने में काम करते थे। उस कारखाने का मालिक दानिलोव था। उसने कभी कोई काम नहीं किया लेकिन बहुत अमीरी का जीवन जीता था। उसके पास ये सारी दौलत कहां से आयी थी? हम उसके लिए काम करते थे लेकिन वह हमें बहुत कम पैसे देता था - वह हमें लूट रहा था। वह हमारे दम पर ऐश कर रहा था। उसके पास कारखाना, पैसा, कारें आदि सबकुछ था लेकिन हमारे पास मेहनत करने वाले हाथों के सिवाय कुछ नहीं था।

इसीलिए हमें उसके लिए काम करना पड़ता था। और ऐसी स्थिति केवल दानिलोव के

कारखाने में ही नहीं थी, बल्कि अन्य सभी कारखानों और संयंत्रों में भी यही हालत थी।

गांवों में किसानों का जीवन भी कठिनाई में गुजर रहा था। उनके पास छोटे खेत थे जबकि ज़मींदार लोग बहुत बड़े क्षेत्रफल में फैली जमीनों के मालिक थे। गरीब किसान बेहद अमीर ज़मींदारों के यहां काम करते थे।

ज़मींदार और पूँजीपति एकजुट थे और और सबसे अमीर ज़मींदार - ज़ार भी उनका समर्थन करता था। वह सभी का शासक था। उसने ऐसे नियम लागू किए जो केवल ज़मींदारों और पूँजीपतियों को फायदा पहुंचाते थे। परन्तु, ऐसी व्यवस्था में मज़दूरों और किसानों का जीवन और बदतर हो गया।

व्लादिमीर इल्यीच लेनिन मज़दूरों के दोस्त थे। वे ज़ार द्वारा लागू किए गए ऐसे नियमों को बदलना चाहते थे। वह चाहते थे कि सभी मज़दूरों का जीवन सुखद हो। उन्होंने मज़दूरों के अधिकारों के लिए लड़ाई लड़ी।

लेनिन ने ऐसे लोगों को इकट्ठा करना शुरू किया जो मज़दूरों का समर्थन करते थे। जितने ही ज्यादा ऐसे लोग एकजुट होते जाते, मज़दूरों की पार्टी - कम्युनिस्ट पार्टी - उतनी ही मजबूत होती जाती।

पार्टी का यह मानना था कि लड़े बिना कुछ भी हासिल नहीं किया जा सकता। पूरी दुनिया के मज़दूर भी इस बात को समझ सकते थे।

मज़दूर लेनिन से प्यार करते थे, जबकि ज़मीनों के मालिक और पूँजीपति उनसे नफ़रत करते थे। पुलिस ने लेनिन को गिरफ़्तार किया, और उनसे छुटकारा पाने के लिए उन्हें साइबेरिया निर्वासित कर दिया। इसलिए लेनिन को विदेश जाना पड़ा, लेकिन उन्होंने मज़दूरों को पत्र लिखकर उनकी कार्रवाईयों के बारे में मार्गदर्शन करना जारी रखा। बाद में वह रूस लौट आए और अन्याय के विरुद्ध मज़दूरों की लड़ाई में उनका नेतृत्व किया।

1917 में, फरवरी के महीने में, युद्ध के दौरान मज़दूरों ने पहले जार का तख़्ता उखाड़ फेंका और उसके बाद उसी वर्ष 7 नवम्बर को उन्होंने ज़मींदारों और पूँजीपतियों को खदेड़ दिया। उन्होंने उनकी ज़मीनें और कारखाने छीन लिए और वहाँ स्वयं अपने नियम लागू किए, उन्होंने अपने काम के बारे में बहस-मुबाहसा किया और उससे संबंधित निर्णय लिए।

मज़दूरों के लिए यह एक नया कार्य था। लेनिन और उनकी पार्टी ने इस कठिन काम में मज़दूरों का मार्गदर्शन किया और एक नया जीवन स्थापित करने में उनकी मदद की। लेनिन ने कड़ी मेहनत की क्योंकि उन्हें बहुत काम करना था। उनकी सेहत खराब होती गयी और 1924 में व्लादिमिर इल्यीच लेनिन का देहान्त हो गया।

उनकी मृत्यु पर सभी लोग शोक में डूब गए लेकिन हम उनके मार्गदर्शन करने वाले शब्दों को कभी नहीं भूलेंगे। हम उनकी सलाह का पालन करने का प्रयास करते हैं। हम नए सिरे से अपने काम और अपने जीवन को स्थापित कर रहे हैं।

नादेज़्दा क्रुप्स्काया

लेनिन के बारे में

हम बैठे थे हरे चरागाह में,
नदी के हरियाले किनारे पर
सुन्दर और खुशगवार चेरी का पेड़
लदा हुआ था महकते फूलों से।

अचानक पेड़ों की शाखाओं को हिलाती
सरसराती हवा का झोंका आया
और ऊपर से झरने लगे हमारे कन्धों पर
चेरी के नर्म–नर्म फूल।

चलने दो हवा को,
झरने दो फूल
क्योंकि हमारे ग्रुप का नेता
पढ़कर सुना रहा है लेनिन की कहानी।

कैसे रहते थे वो और कैसे वो पढ़ते थे,
कैसे वो लोगों के दोस्त बन जाते थे...
और आज अप्रैल के सुनहरे दिन
हम सब याद करते हैं उनको।

शहद की तलाश में
मधुमक्खियाँ मँडरा रही हैं,
बादल आकाश में तैरते चले जा रहे हैं...
और हमारा साथी पढ़ रहा है:

"लोग गुलामों की तरह रहते थे,
काम करते थे दूसरों के खेतों पर,
गरीबों के लिए थी और भी मुश्किल
क्योंकि उनके लिए नहीं था कोई भी स्कूल!

कठिन था जीना मज़दूरों के लिए,
किसान भी मुश्किल में जीते थे।
ज़ार भेजता था जेल में

जो भी आवाज़ उठाता था उसके ख़िलाफ़।

लेनिन लोगों का दुख समझते थे।
उन्होंने तय किया : "हम लड़ेंगे!
गिर जायेगा ज़ार का सिंहासन,
ख़त्म हो जायेगी मज़दूरों की गुलामी!

हम दूर करेंगे रातों का अँधेरा!
आसमान चमक उठेगा सुबह की लाली से
और मेहनती जनता परास्त करेगी
ज़ार और तमाम अमीरों को!
वह चाहते थे कि लोगों का जीवन
खिल उठे चेरी के वृक्ष की तरह।
और उनके हिस्से में भी आयें
सारी खुशियाँ और सारी आज़ादी।

लेनिन ने बच्चों को दिये स्कूल,
उन्होंने किसानों के घरों में रोशनी पहुँचायी...
वो थे हमारे प्यारे,
हम उन्हें ख़ूब याद करते हैं!

चिड़ियाँ उड़ती जा रही थीं,
ऊपर, और ऊपर
हमने देखा
सेब का पेड़ भी फूलों से भरा था।

हमारा साथी पढ़ता है
लेनिन की कहानी,
हमारी ज़िन्दगी भरी है खुशियों से
जैसे फूलों से भरा है चेरी वृक्ष।

– पी. तिचिना

लेनिन का बचपन

लेनिन का जन्म बसन्त ऋतु में हुआ था। उस समय सूरज चमक रहा था और बर्फ पिघल रही थी।

घास का उगना शुरू ही हुआ था और ताजा घास के छोटे कोंपल फूटते देखे जा सकते थे।

लेनिन भी छोटे थे और लोग उन्हें व्लादिमिर इल्यीच नहीं बल्कि वोलोद्या कह कर पुकारते थे।

वोलोद्या की एक नानी थी जिनके पास एक छोटा सन्दूक था। वह अपने कपड़े उसमें रखा करती थीं। उस सन्दूक के ढक्कन के अन्दर के हिस्से पर कई अलग-अलग तस्वीरें चिपकी हुई थीं। जैसे ही वह उस सन्दूक को खोलतीं, वोलोद्या उन तस्वीरों की तरफ देखने लगता। वे दोनों ही बहुत ध्यान से उन तस्वीरों को देखते थे। नानी एक बूढ़ी, कमज़ोर आंखों वाली महिला थीं जिन्हें चश्मा लगा हुआ था।

वोलोद्या उनका चश्मा लेता और उसे अच्छी तरह से साफ कर देता ताकि नानी को ठीक से दिखायी दे। वह उन्हें बहुत प्यार करता था।

आई. इवेन्सेन

वोलोद्या के खेल

किशोर वोलोद्या ने विभिन्न प्रकार के खेल खेलना शुरू किया जैसे स्किटल (गोरोद्की), लुका-छिपी आदि।

वोलोद्या को अपने छोटे भाई मित्या के साथ खेलना बहुत पसन्द था। वे घुड़सवारी का खेल खेलते थे। वोलोद्या घोड़ा बन जाता और मित्या उसका सवार।

वोलोद्या हमेशा दुलत्ती मारता, रुक जाता और अपना साज़ उतार फेंकता। मित्या उसे चाबुक से धमकाने या चिल्लाकर उसे नियंत्रित करने का कितना ही प्रयास करता - लेकिन वह घोड़ा बने वोलोद्या को रोक नहीं पाता।

तब मित्या नाराज हो जाता और कहता:

— "यदि मेरा घोड़ा मेरे आदेश नहीं मानता तो मुझे घुड़सवार नहीं बनना।"

वोलोद्या ने जवाब दिया:

— "तुम्हें घोड़े को मारे बिना और उस पर चीखे बिना उसे संभालना सीखना चाहिए। बेहतर होगा कि तुम उसे आराम करने दो और घास खिलाओ।"

मित्या राज़ी हो गया और उसके बाद उन्होंने मिलजुल कर खेला: घुड़सवार घोड़े पर बहुत जोर नहीं देता और वह ठीक से दौड़ता। मित्या ने वोलोद्या को घास खिलायी और वोलोद्या ने उसे खाने का दिखावा किया।

आई. इवेन्सेन

अप्रैल

अप्रैल में सभी वनों पर हरियाली छा जाती है,
लहलहा उठते हैं सारे खेत और चरागाह
छोटी नदियाँ भर उठती हैं नीले पानी से
और बह चलती हैं तोड़कर अपने किनारे।
बच्चों ने बनया बसन्त का बड़ा सा हार
स्कूल में लेनिन की तस्वीर के लिए
क्योंकि सारी दुनिया के मज़दूरों के नेता
लेनिन थे जन्मे अप्रैल में।

– एम. स्तेलमाह

लेनिन का वचन

उल्यानोव परिवार के अहाते के सबसे भीतरी भाग में एक छोटा आउटहाउस था जिसमें तीन छोटी-छोटी खिड़कियाँ थीं। कोल्या नेफेदिएव अपनी माँ के साथ उस आउटहाउस में रहने लगा। नयी जगह पर पहले दिन की शुरुआत होते ही कोल्या घर से बाहर निकला और आसपास जाँच-पड़ताल करने लगा। अहाते के बीचों-बीच तारों वाली विशाल सीढ़ी वाला खंभा था। अहाते के बहुत अंदर एक जालीदार बाड़ थी जिसके पीछे एक गहरा विशाल बगीचा नज़र आ रहा था; वहाँ एक कोने में पम्प वाला कुआँ था जिससे बगीचे में पानी दिया जाता था।

सबसे पहले वह उन विशाल सीढ़ियों की तरफ दौड़ा। इसी समय चमकीली भूरी आंखों

वाला छोटे कद का एक लड़का उल्यानोव परिवार के मकान से बाहर निकला और दृढ़ कदमों से उसकी ओर बढ़ा।

- तुम्हारा नाम क्या है?.. कोल्या?मैं वोलोद्या हूं। आओ हम मिलकर खेलते हैं।

दोनों लड़के विशाल सीढ़ियों के चारों तरफ दौड़े, कुएं के पास गए, इसके बाद कोल्या नेफेदिएव ने बाड़ की ओर इशारा करते हुए पूछा:

— क्या यह तुम्हारा बगीचा है?

— हमारा, - वोलोद्या ने जवाब दिया।

— चलो वहाँ चलते हैं, क्या हम वहाँ जा सकते हैं?

— बिल्कुल!

वे दौड़कर बगीचे में पहुँच गए। कोल्या को वहाँ सेब के पेड़ों की लंबी कतारें, बेरियों, रसभरी, काकबदरी की झाड़ियाँ नज़र आयीं। वहाँ चेरी का ऊँचा पेड़ भी था जो फल से लदा हुआ था। कोल्या की माँ एलीना ग्रिगोरिएव्ना एक गरीब दर्जिन थीं और वह उसके लिए फल नहीं खरीद पाती थीं। उसने वोलोद्या का हाथ खींचा:

— आओ कुछ बेरिया उठाएँ।

वोलोद्या ने तुरन्त जवाब दिया:

— नहीं, इसकी इजाज़त नहीं है।

कोल्या ने हैरान होकर पूछा:

— क्यों, इसकी इजाज़त क्यों नहीं है?

— क्योंकि मेरे माँ का आदेश है कि 14 जुलाई तक बगीचे में किसी चीज़ को छेड़ा नहीं जाए। चौदह तारीख को मेरे पिता का जन्मदिन है और हम उसी दिन इकट्ठा होकर चेरी बीनेंगे। उससे पहले नहीं। मैं माँ को वचन दे चुका हूँ।

कोल्या खुद पर काबू नहीं कर पाया:

— हम थोड़ी चेरी ही तोड़ेंगे। हमको कोई नहीं देखेगा।

वोलोद्या उसकी ओर घूमा और सीधे उसकी आँखों में आँख डालते हुए कहा:

— मैं वचन दे चुका हूँ। और इसका मतलब है नहीं!

दोनों लड़के काफ़ी देर तक बगीचे में खेलते रहे। वोलोद्या ने एक भी चेरी नहीं उठायी और ना ही कोल्या को ऐसा करने दिया। और फिर, 14 जुलाई को उल्यानोव परिवार के सभी सदस्य - मारिया अलेक्सान्द्रोव्ना, आनिया, साशा, ओल्या, वोलोद्या और इल्या निकोलायेविच - बेरियाँ इकट्ठा करने के लिए टोकरियाँ लेकर बगीचे में पहुँचे। कोल्या को जीभरकर मीठी चेरियां और रसभरी मिलीं।

एस. मिरेर

वोलोद्या उल्यानोव की शिक्षा

वोलोद्या ने साढ़े नौ वर्ष की उम्र में पहली कक्षा के छात्र के तौर पर जिमनेज़ियम में दाखिला लिया।

... वह आसानी से और उत्सुकता से पढ़ता। उसकी बेहतर क्षमताओं के अलावा, उसके पिता ने उसे कोई भी काम पूरा करने में दृढ़ता, काम करने का सही तरीका और सटीकता का पालन करना सिखाया, ठीक उसी तरह जैसे उन्होंने वोलोद्या के बड़े भाई और बहन को सिखाया था।

शिक्षक कहते थे कि पाठों के अर्थ पर ध्यान देने से वोलोद्या को बहुत मदद मिलती है। अपनी अच्छी क्षमता के कारण वह कक्षा में ही नया पाठ याद कर लेता और घर पर उसे वह पाठ बस थोड़ा-सा दोहराना पड़ता था। इसीलिए, जब हम सभी बड़े लोग रसोई में एक बड़ी मेज पर एक लैम्प की रोशनी में काम करना शुरू करते, तो वोलोद्या अपना सारा काम पूरा कर चुका होता था और बात करके, बदमाशी करके और बच्चों को छेड़कर हमको तंग करता था।

उन दिनों बड़ी क्लास में ढेर सारा होमवर्क दिया जाता था। "वोलोद्या, बहुत हो चुका!" "माँ, वोलोद्या मुझे पढ़ने नहीं दे रहा है!"। लेकिन वोलोद्या शान्त बैठ ही नहीं सकता था और वह सबको तंग करता और इधर-उधर मटरगश्ती करता। कभी-कभी माँ सभी छोटे बच्चों को हॉल में ले जाती और वहाँ वे माँ के पियानो के सुर में सुर मिलाते हुए बालगीत गाते।

...जब पिताजी घर पर होते तो वे हम बड़ों को बचा लेते, और वोलोद्या को अपने केबिन में ले जाकर उसका होमवर्क जाँचते। आमतौर पर वोलोद्या हर चीज़ जानता था। इसलिए पिताजी उसकी पूरी नोटबुक से छाँट-छाँट कर प्राचीन लातिनी शब्द पूछते। लेकिन वोलोद्या कोई गलती किए बिना उनका भी जवाब बता देता...

वोलोद्या ने स्वर्ण पदक के साथ जिमनेजियम से स्नातक की पढ़ाई पूरी की और कज़ान विश्वविद्यालय के विधि विभाग में दाखिला लिया...

उन वर्षों में ज़ार की सरकार केवल मज़दूरों और किसानों ही नहीं, बल्कि छात्रों को भी उत्पीड़ित करती थी।

असली पुलिस ब्लडहाउंड "छात्रों के निरीक्षक" के रूप में नियुक्त किए गए थे, सभी निर्दोष छात्र समूहों को बंद कर दिया गया था, सभी संगठनों पर प्रतिबंध लगा दिए गए थे, और कई छात्रों को गिरफ्तार और निष्कासित किया गया। सभी विश्वविद्यालयों में छात्रों ने विरोध करना शुरू कर दिया। कज़ान विश्वविद्यालय में भी तथाकथित छात्र उपद्रव हुआ। व्लादिमिर इल्यीच ने भी बेनतीज़ा बैठकों में भाग लिया और उन्हें भी अन्य छात्रों के साथ विश्वविद्यालय से निकाल दिया गया तथा कज़ान से कुकुशिनो गाँव में निर्वासित कर दिया।

इस तरह, 17 वर्ष की उम्र में ही व्लादिमिर इल्यीच की स्कूली शिक्षा पूरी हो चुकी थी। लेकिन वे इतने सचेत थे कि वे बिना किसी मदद के स्वतन्त्र तरीके से अपनी शिक्षा पूरी कर सके।

अपने जीवन के उन तीन वर्षों में - पहले कज़ान में, फिर समारा में - इल्यीच एक ऐसे

क्रान्तिकारी बन गए जो बहादुर, आत्मविश्वास से लबरेज, किसी भी कठिनाई से ना डरने वाला था और जिसने अपनी सारी ताकत मज़दूरों की मुक्ति के लक्ष्य को समर्पित कर दी।

ए.आई. उल्यानोव के संस्मरणों से

झील के पास झोपड़ी

गहरे नीले सागरों के पार नहीं
सुदूर ऊँचे पर्वतों के पार नहीं
घने जंगलों से भरे इलाक़े में
जिसके किनारे थीं गहरी नीली झीलें
सुनहले बालों वाले दो भाई
रहते थे एक झोंपड़ी में माता-पिता के संग।

एक दिन माँ ने कहा उनसे :
– ख़ूब साफ़-सुथरा बना दो झोपड़ी को
और बिल्कुल मत करना शैतानी :
अलस्सुबह कल शहर से
आने वाले हैं एक मेहमान।
मेहमान आया। मुस्कुराते हुए लेकर अपना सामान।
– नमस्ते बच्चो! बोला वह,
बच्चों को आती न थी रूसी
सो जवाब दिया फिनिश भाषा ने अपनी।
मेहमान रहने लगा उनकी झोपड़ी में
और बच्चों का बन गया दोस्त
उनके साथ हमेशा पेश आता था
नरमी और प्यार से
जैसे पिता अपने बच्चों से।

जैसे ही पर्वतों के पीछे से सूरज उगता

मेहमान जागकर बाहर आ जाता।
और शान्त सुबह में
बच्चे उसका इन्तज़ार करते मिलते।
उम्रदराज़ दोस्त का हाथ पकड़कर
मैदान पारकर वे चले जाते जंगल में
जहाँ सौ साल पुराने चीज़ के पेड़
झबरीली शाखें हिलाकर
उनका स्वागत करते।
और काफी-यार्वी झील में
गर्मियों की लिली के फूल
उनके लिए खिलते।
बच्चे मेहमान के साथ दौड़ते और हँसते
गर्मियों का पूरा दिन बिताते वे साथ-साथ!
वह बच्चों के साथ मछलियाँ पकड़ने जाता
और सिखाता उन्हें रूसी भाषा।
वह उनके साथ जंगल से बेरियाँ चुनकर लाता,
और उनके पिता के साथ मिलकर भूसा सुखाता।
और शाम को जब घर पर हो जाती शान्ति
वह देर रात तक बैठकर सोचता और लिखता।

एक दिन पिता और मेहमान
के बीच नदी किनारे हुई बातचीत :
- मेरे अच्छे दोस्त, मैं जानता हूँ
आप कौन हैं,
और किसका ख़्याल आप करते हैं :
आप लड़ते हैं अमीरों के खिलाफ़
सीधे-सादे, मेहनती लोगों के लिए,
वे डरते हैं आप से
और डराते हैं जेल से
ताकि हमारे और आपके बीच
आ जाये एक दीवार।
मगर हम मज़दूर हैं इतने सारे,
हमारे सामने खुली राह है रोशन।
बहादुरी और सच्चाई से लड़ने की ख़ातिर
सारे मेहनतक़श आपके साथ चलने को हैं तैयार!

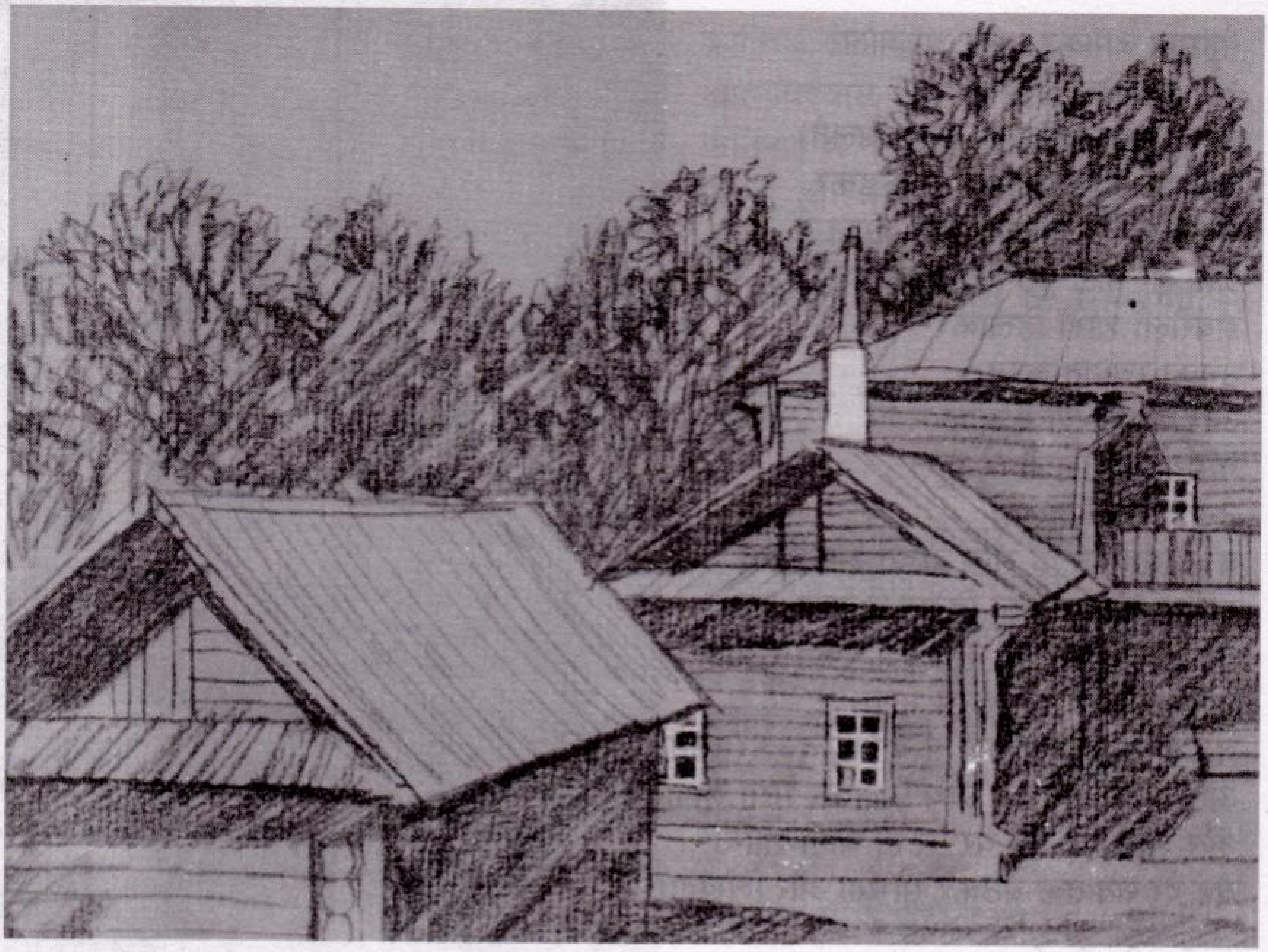

दिन बीत गये बड़ी जल्दी-जल्दी
जल्दी ही बच्चों ने मेहमान से ली विदाई।
उस दिन से, झील और घर
और जंगल और पर्वत - हर चीज़ चारों तरफ़
हिफ़ाज़त करते रहे उसके नाम की
चीड़ के पेड़ हल्के से सरसराते थे
मानो बच्चों को बताना न चाहते हों
कि कौन था वह, और
क्यों इतना प्यार करता था उनसे।
क्यों मालिक लोग डरते हैं उससे?
क्यों सारा देश है उसके पीछे?
कैसे वह मुक्ति दिलायेगा ग़रीबों को
उनकी बदहाली से?
क्यों इतना प्यारा है लेनिन का नाम हम सबको
क्यों याद करते हैं हम आज भी उनको?

...
कितने ही साल बीत गये तब से,
प्यारा मेहमान अब हमारे बीच नहीं है।
पर उसकी याद ज़िन्दा रहेगी हमेशा :
बचपन से हम जानते हैं :
लेनिन हमारे साथ हैं!
लेनिन का नाम ऊँचा होता जायेगा
दुनिया में यह नाम अमर हो जायेगा
लेनिन के शब्द अटल रहेंगे सदियों तक
लेनिन के काम बढ़ते रहेंगे पार्टी के हाथों में।

– एन. ज़ाबिला

साधारण दस्ताने

दादा आन्द्रेई के पास एक लकड़ी का सन्दूक है। उस सन्दूक में ढेर सारी रोचक चीज़ें हैं। उसमें लाल सेना का एक हेल्मेट है जिसे पहनकर दादा ने नवनिर्मित सोवियत देश की दुश्मनों से रक्षा की थी, उसमें एक पुराना इस्तेमाल हो चुका तंबाकू का पाइप है – सैनिक की खुशिया हैं और बढ़ई के काम आने वाले विभिन्न प्रकार के औज़ार हैं।

और इन सब अजीबो-गरीब चीज़ों में खुरदुरे भेड़ की ऊन के बने सामान्य बुनाई वाले साधारण दस्तानों का जोड़ा है जो हर जगह से रफ़ू किया हुआ है। उन्होंने इन दस्तानों को संभालकर क्यों रखा है?

आन्द्रेई के पोते-पोती जानने के लिए उत्सुक हो गए। वे सबकुछ जानना चाहते थे।

एक दिन दादा ने उन्हें बुलाया और कहा:

- ठीक है, मैं तुम्हें बताता हूं। मैं तुम्हें बताऊँगा कि ये दस्ताने कैसे हैं। और यह कोई साधारण कहानी नहीं है।

1917 की सर्दियों में अक्टूबर क्रान्ति के ठीक बाद, मैं स्मोल्नी की एक चौकी पर खड़ा था जहां से पहली सोवियत सरकार सभी कार्य संचालित कर रही थी।

मैं वहाँ तैनात था और नंगे हाथ में अपनी राइफल थामे हुए था। उन दिनों सन्तरियों के पास दस्ताने नहीं थे। वह बेहद मुश्किल भरा समय था – अत्यधिक ठंड और साधनों की कमी थी उन दिनों। हमने हाल ही में बुर्जुआ वर्ग को उखाड़ फेंका था। वे हमारी राष्ट्रीय शक्ति से क्रोधित थे।

– सभी सन्तरियों के प्रभारी, एक बहादुर नाविक ने मुझे चेतावनी दी – पूरी तरह चौकस रहो सैनिक, उस घर में स्वयं लेनिन हैं। तुम्हें यह पता होना चाहिए कि हमें उनकी रक्षा कैसे करनी चाहिए!

बिल्कुल, मैं जानता हूं। मैं कम उम्र का सैनिक हूँ लेकिन मैंने अक्टूबर की लड़ाइयों में भाग लिया था, सेना के कैडेटों के साथ लड़ा था। मेरी राइफल निशाना लगाने के लिए तैयार है। मैं पूरी तरह सावधान और चौकस हूँ। फिर भी उस रात कड़ाके की ठंड थी। आसमान से बर्फबारी हो रही थी। डंक की तरह चुभने वाली और भयंकर हवा हमारे हेल्मेट को चीरे दे रही थी। हाथ ठण्ड से काँप रहे थे।

मैं ठण्ड से अकड़-सा गया था। मैं अपने पैर पटक रहा था, काँप रहा था और अपनी साँस से हाथों की उँगलियों को गरम करते हुए सोच रहा था: "मैं फिर भी बेहतर स्थिति में हूँ, खाइयों और खुले मैदानों में हमारे सैनिकों की क्या स्थिति है।" मैं अपने स्वयं के गरम-आरामदायक घर और शांतिपूर्ण जीवन की कल्पना करने लगा। अचानक एक कार धुआँ छोड़ते हुए, अपनी बिजली की आंखों की चमक फैलाते हुए मेरी तरफ इस तरह बढ़ी कि मैं बाजू हट गया लेकिन मैं अपनी राइफल ताने रहा।

आम नागरिकों के कपड़े पहना एक व्यक्ति उस कार से उतरा और उसने मुझ पर तिरछी निगाह डाली। उसने ध्यान दिया कि मैं कार से कैसे डर गया था, वह मुस्कुराया और फिर स्मोल्नी की ओर बढ़ने लगा।

मुझे गुस्सा आया और मैं उससे अधिक कड़ाई से पूछना चाहता था:

"तुम्हारा परमिट?"

लेकिन मेरे होंठ जम गए थे और धमकाने वाले शब्दों के बजाय, मैं एक गुस्सैल बत्तख की तरह कुछ अस्पष्ट-सा फुसफुसा सका।

फिर भी, वह अजनबी समझ गया कि मैं उससे उसका परमिट माँग रहा हूँ। उसने अपनी जेबों में परमिट तलाश किया लेकिन वह उसे नहीं मिला। ठण्डी हवा उसके कोट के किनारों और बाजू को चीर रही थी। चारों तरफ से हवा बह रही थी। वह ठण्ड में अकड़-सा गया था।

अन्ततः उसे अपना परमिट मिल ही गया। उसने अपना परमिट मेरी ओर बढ़ा दिया लेकिन मैं आवश्यकता के अनुसार मुहर और हस्ताक्षर को ठीक से नहीं देख सका। मैं अपनी उंगलियों की जकड़ को ढीला नहीं कर सका क्योंकि वे राइफल से चिपकी हुई थीं।

उसका ध्यान इस ओर गया और उसने हमदर्दी के साथ कहा:

- तुम्हें यहाँ हाड़ गलाने वाली ठण्ड लग रही है, कॉमरेड।

उसने अपना परमिट मेरे और क़रीब बढ़ा दिया ताकि मैं मुहर को ठीक से देख सकूँ। उसने परमिट दिखाया और सीढ़ियों से ऊपर चला गया।

बस मामला निपट गया। वह चला गया और मैंने राहत की सांस ली: मैं एक व्यक्ति को इतनी घनघोर हवा में रोके क्यों हुआ था? उसका कोट और जूते पतले थे...

अचानक सन्तरियों का प्रभारी, वह बहादुर नाविक, दौड़ता हुआ मेरे पास आया। वह बिना किनारे वाली टोपी और नाविकों वाली बिना बटन की बिरजिस पहने हुए था। उसके एक हाथ में राइफल और दूसरे हाथ में तलवार थी और दो ग्रेनेड उसकी बेल्ट से बंधे थे।

- नायमानावे आन्द्रेई, तुम पूरी तरह ठण्ड से अकड़ गए हो, मेरे भाई?

- नहीं, मैं ठीक हूं, मैं इसे बर्दाश्त कर सकता हूँ।

- तब फिर तुमने अधिकारियों से शिकायत क्यों की?

- मैंने किसी से शिकायत नहीं की...

- अरे हाँ, अब बताओ भी! तब फिर व्लादिमिर इल्यीच ने तुम्हारे कारण अपने सहायकों को क्यों डाँटा?उन्होंने कहा कि हमारे बिरादर की ठीक से देखभाल नहीं की गयी, चौकी पर तैनात सन्तरी ठण्ड में अकड़ गए हैं। उन्होंने तुरन्त फर के कोट मंगाने का आदेश दिया। उनके लिए उबाली गयी केतली उन्होंने हमारे पास भिजवा दी, ताकि हम बारी-बारी गरमागरम चाय पीकर शरीर को कुछ गरमा सकें... तुमने ज़रूर उनसे भी कॉफ़ी माँगी होगी! मगर, तुम हो बहुत चतुर!

- क्या वे स्वयं लेनिन थे? - मैंने दोबारा इसलिए पूछा क्योंकि मैंने जो सुना मैं उस पर विश्वास नहीं कर पाया।

इस पर नाविक हंसने लगा:

- तुम भी अजीब हो! तुम लेनिन को नहीं पहचान सके! तुम शायद यह सोच रहे होगे कि लेनिन एक प्रकार के **हर्क्यूलिस** या विशालकाय आदमी होंगे...! उन्होंने ज़ार को उखाड़ फेंका, दसियों लाख बुर्जुआओं को हरा दिया... वह एक शब्द भी कहते हैं तो पूरी दुनिया उसे सुनती है! यह सब सही है - लेनिन के पास असाधारण शक्ति है। लेकिन एक व्यक्ति के रूप में वह बेहद सरल और सामान्य हैं। हमारे प्यारे कॉमरेड लेनिन। बल्कि उन्हें इल्यीच कहना बेहतर होगा। तो अब तुम जानते हो कि तुम किसकी रक्षा कर रहे हो। वह क्रान्ति के नेता है! चौकस रहो, सैनिक!

उसने यह सब समझाया और अपने गार्डरूम में चला गया।

ड्योढ़ी पर पहुँचते हुए, उसने पलट कर देखा और उल्लास में चिल्लाकर बोला:

- आधे घण्टे बाद, हम तुम्हारी जगह किसी और सन्तरी को भेज देंगे! चाय पीने आ जाना!

नाविक चला गया और मैंने गरमी का अहसास किया। मेरा हृदय प्रेरणा से ओतप्रोत था। मैंने लेनिन को सर्द और जमा देने वाली हवाओं के बीच क्यों रोके रखा?

जल्दी ही मेरी जगह किसी सन्तरी को भेज दिया गया, और हँसते हुए सैनिक साथियों ने लेनिन की चाय की केतली से मुझे चाय थी। अचानक मुझे बुलवाया गया:

- आन्द्रेई नायमानोव, कॉमरेड उल्यानोव-लेनिन तुमसे मिलना चाहते हैं!

मेरे कदम लड़खड़ा उठे।

मैं वहाँ पहुँचा। सभी सन्तरियों को मैं पहचानता था। उन्होंने यह कहते हुए चेतावनी भरे अंदाज़ में देखा कि मैंने कोई गलती कर दी थी।

मुझे याद नहीं मैंने वहाँ कैसे प्रवेश किया और अपने आगमन की सूचना दी। मैंने एक सैनिक की तरह अपना हाथ अपनी हैट पर लगाया। मुझे व्लादिमिर इल्यीच का निश्चिंत चेहरा दिखा दिया। वे बेहद स्नेह के साथ मेरी ओर देख रहे थे। उन्होंने ये दस्ताने निकाले और मेरी ओर बढ़ाते हुए कहा:

- कृपया ये दस्ताने ले लो। एक दयालु महिला ने मुझे ये उपहार स्वरूप दिए थे। उसने

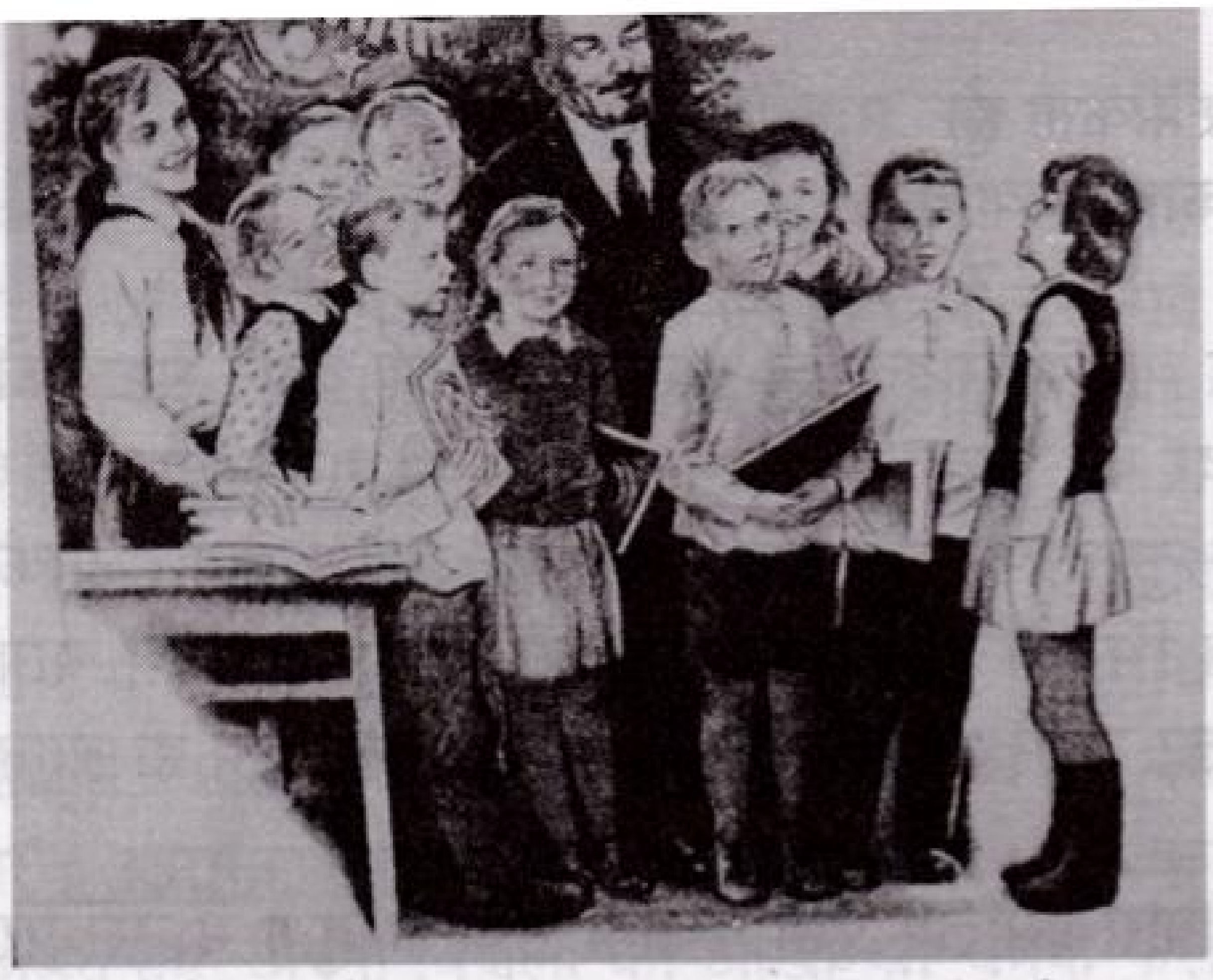

खुद ही इन्हें बुना था।

दस्ताने बेहद प्यारे: मोटे और गरम थे। राइफल से गोली चलाने में आसानी के लिए दाएं हाथ के दस्ताने की दो उंगलियां अलग बंधी हुई थीं। वे दस्ताने हम सैनिकों के लिए एकदम उपयुक्त थे, फिर भी मुझे उन्हें लेते हुए शर्म महसूस हुई।

लेनिन मेरी झिझक को भाँप गए।

- परेशान मत हो और इन्हें रख लो। तुम्हें इनकी ज़रूरत मुझसे ज़्यादा है। वैसे भी, मेरे पास अपने दस्ताने हैं।

उन्होंने इतने प्रेम से वे दस्ताने मेरे हाथों पर रखे जो मेरे दिल को छू गया।

मैंने सम्मान प्रकट किया और चला आया...

दादा आन्द्रेई ने बोलना बंद कर दिया, उन्होंने अपनी हथेली से आंखों को ढँक लिया जैसे अपने उस प्रिय दृश्य को दोबारा देखना चाहते हों।

उन्होंने गहरी साँस ली और कहा:

-यह बहुत पुरानी बात है लेकिन मुझे अब भी अच्छी तरह से याद है... हाँ, मुझे कॉमरेड लेनिन से इतना प्यारा, बेशकीमती तोहफ़ा मिला था।

-यह बेशकीमती है, लेकिन आपने इन्हें ठीक से नहीं रखा! - यह आन्द्रेई की पोती नताशा की तेज आवाज़ थी, जो हमेशा सबसे आगे रहती थी। - ये हर जगह से रफ़ू किए हुए हैं। आपने लेनिन के उपहार को फटने क्यों दिया, दादाजी?

- मेरे पास और कोई विकल्प नहीं था। वे बार-बार फट जाते थे और मैं उन्हें ठीक करता था।

-यह सुनकर पोती मारीशा ने अपना ताली पीटते हुए कहा - तो आपको इन्हें छिपा देना चाहिए था, दादाजी!

दादा आन्द्रेई मुस्कुरा दिए:

- इन्हें छिपाने की ज़रूरत नहीं है, ये हीरे नहीं है बल्कि साधारण दस्ताने हैं। लेनिन ने इन्हें मुझे महान काम के लिए, एक उद्देश्य से भेंट किया था।

- याशा अपनी बहनों पर चिल्ला कर बोली - हाँ, ताकि वह राइफल को ठीक से अपने हाथों में पकड़ सकें और दुश्मनों को हरा सकें, क्या तुम्हें समझ नहीं आता!

- आन्द्रेई ने दस्तानों को वापस सन्दूक में रखते हुए कहा- हां, मैं यही कर रहा था, मैंने किसी भी दुश्मन को घुसने नहीं दिया और सभी प्रकार के लोगों की रक्षा की।

या. पिन्यासोव

इलिच और लड़की

मैं सुनाती हूँ तुम्हें एक कविता
बच्चो, मैं बताती हूँ तुम्हें
कि एक दिन कैसे एक भूखी बच्ची
मिल गयी इलिच से।
ताकि हमारा लाल सितारा
हरदम रहे साथ हमारे
जब उन दुख भरे दिनों में
लड़ रहे थे हम दुश्मन से।
लेनिन थे काम में डूबे मगर
उस बच्ची को ले आये अपने संग
उसे गर्मी दी और खाना खिलाया
और फिर तस्वीरों वाली एक किताब निकाली
बड़ी-बड़ी और खास चीज़ों के साथ
वह छोटी-छोटी बातों का रखते थे ध्यान...
वह जानते थे लोगों से प्यार करना
और बुराई से करते थे नफ़रत।

उन्हें नापसन्द थे सारे अमीर
और बादशाह और जनरल लोग
पर प्यारे थे सीधे-सादे आम लोग
और प्यारे थे छोटे बच्चे भी।
हमारे देश के सारे बच्चे
बढ़ रहे हैं बसन्त के बागीचे की तरह
वह खूब काम करेंगे और
बनेंगे लेनिन की तरह।

—एम. रील्स्की

सोकोल्निकी में नए साल की पार्टी

जहाँ से हमें नववर्ष का पेड़ मिल सकता था, वह स्थान बहुत दूर नहीं था। सोकोल्निकी में उन्होंने अच्छा झाड़ीदार पेड़ चुना, उसे काटा और फॉरेस्ट स्कूल ले आए थे।

बच्चों ने उन्हें दो आरपार बंधे तख्तों से पेड़ को कसते हुए देखा ताकि वह फ़र्श पर मजबूती से टिका रहे। इसके बाद इलेक्ट्रीशियन वोलोद्या उस पेड़ को रौशन करने के लिए तार ले आया और उसकी शाखाओं पर बिजली के बल्ब लटका दिए।

अगले दिन, लगभग एकदम सुबह से ही सभी ने व्लादिमिर इल्यीच लेनिन की प्रतीक्षा करना शुरू कर दिया। उनके आने में अब भी समय था लेकिन बच्चे स्कूल प्रबंधक से बार-बार पूछ रहे थे:

-यदि लेनिन नहीं आए, तो?

-यदि दोबारा बर्फ़भरी आँधी शुरू हो गयी, तो लेनिन आएंगे या नहीं?

वह प्रबन्धक पेत्रोगार्द का एक बूढ़ा मज़दूर था। वह क्रान्ति से पहले लेनिन के साथ जुड़ा रहा था। इसीलिए हर कोई उसी से पूछ रहा था। और वह पूरे आत्मविश्वास के साथ जवाब दे रहा था:

- उन्होंने कहा है कि वे आएंगे, तो वे ज़रूर आएंगे।

दरअसल, शाम को बर्फ़ीला तूफान और भी तेज़ हो गया। चीड़ के पेड़ों से गुज़रती हवा सांय-सांय चिल्ला रही थी, सूखी बर्फ़ जमीन पर साँप की तरह गोल-गोल घूम रही थी। और तभी आकाश से सफ़ेद बर्फ़ के फाहे गिरने लगे।

नववर्ष का पेड़ पहले ही सजाया जा चुका था। सभी खिलौने बच्चों ने ही बनाए थे। उनमें भालू थे, खरगोश थे और हाथी भी थे। इनमें सबसे अच्छा था - गुलाबी गालों, सफ़ेद दाढ़ी वाला सान्ता क्लॉज़।

समय गुज़रा जा रहा था, लेकिन लेनिन अभी तक नहीं पहुंचे थे। तभी बच्चों ने बड़े लोगों में से किसी को धीमी आवाज में यह कहते हुए सुना कि:

-ऐसे बर्फ़ीले तूफ़ान में तो वह बिल्कुल नहीं आएंगे।

बच्चे दौड़कर दोबारा बूढ़े प्रबन्धक के पास पहुँचे।

प्रबँधक ने बेहद सख्त अंदाज़ में कहा:

- मुझे परेशान करना बन्द करो! मैं तुम्हें फिर कह रहा हूं: यदि उन्होंने कहा है कि वे आएंगे, तो इसका मतलब है कि वे ज़रूर आएंगे।

बच्चे फिर इन्तज़ार करने लगे। बाहर तेज़ चक्करदार हवा चल रही थी, और खिड़कियों पर सूखी बर्फ़ टकरा रही थी। इस शोर की वजह से किसी को भी स्कूल पर रुकने वाली कार की आवाज़ सुनायी नहीं थी। उस कार से व्लादिमिर इल्यीच निकले।

वह ऊपर आए, अपना कोट उतारा, और पिघली हुई बर्फ़ से गीला हुआ चेहरा पोंछा।

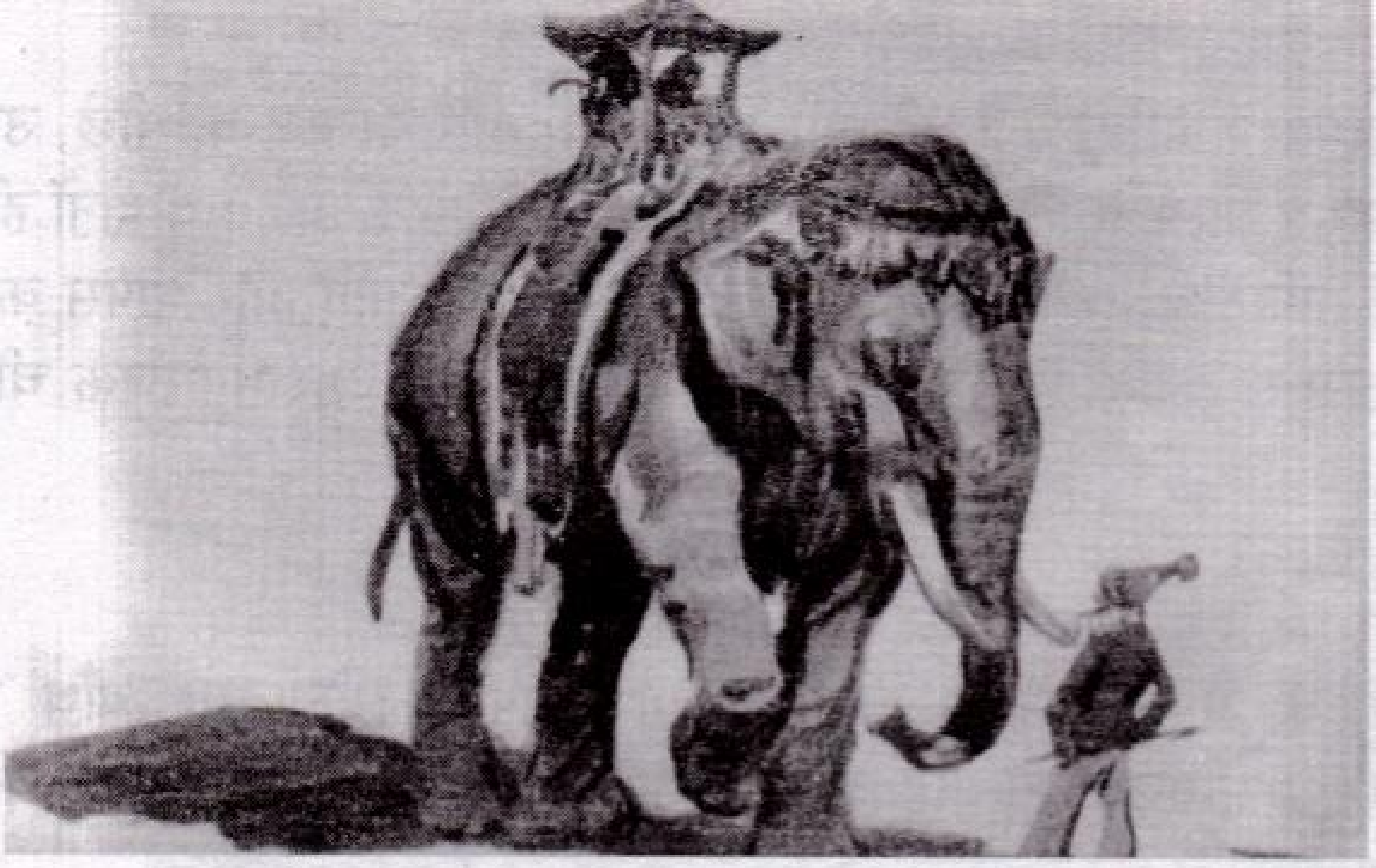

इसके तुरन्त बाद वे उस कमरे में गए जहाँ बच्चे उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे।

बच्चों ने तुरन्त ही लेनिन को पहचान लिया; उन्होंने कई बार उनके पोर्टेट जो देखे थे। हालांकि, पहले-पहल तो सभी बच्चे हक्के-बक्के हो गए और एक ही जगह पर निश्चल खड़े रहे। वे कुछ भी बोले बिना एकटक लेनिन को देख रहे थे।

व्लादिमीर इल्यीच बहुत देर शान्त नहीं रहे। उन्होंने मज़ाकिया अन्दाज़ में आँखें मिचकायी और पूछा:

- चूहा-बिल्ली (लुका-छिपी) का खेल किस-किस को आता है?

पहला उत्तर सबसे बड़ी लड़की वेरा ने दिया: मुझे आता है!

- इसके बाद लीशा ज़ोर से बोला - और मुझे भी आता है।

- इस पर व्लादिमीर इल्यीच बोले, "तो ठीक है, तुम बिल्ली बनोगे!"

सभी बच्चे नववर्ष के पेड़ के चारों ओर खड़े हो गए। कात्या को चूहा बनाया गया। लीशा कात्या को पकड़ने के लिए उसके पीछे भागने लगा और उसके लिए कात्या को पकड़ना आसान भी था। लेकिन उसने लेनिन की पनाह ली और व्लादिमीर इल्यीच ने उसे अपने हाथों में उठा लिया।

-यह क्या बिल्ली चूहे को छू भी नहीं सकी!

इसके बाद सेनिया चूहा बना। लीशा ने उसे पकड़ लिया और वह चूहा बन गया और सेनिया बना बिल्ली।

उन्होंने जीभरकर खेला। सभी को गर्मी लगने लगी।

अचानक कमरे का दरवाज़ा खुला और एक बड़े भूरे हाथी ने कमरे में प्रवेश किया। बच्चे एक साथ चीखने लगे। हालांकि, बहुत से बच्चे स्कूल के पियानो को ढकने के भूरे कपड़े को पहचान गए थे, लेकिन उसके नीचे कौन था?वह हाथी धीरे-धीरे झूम रहा था और सामने उसकी सूँढ़ हिल रही थी; आगे के पैर वालेन्की (ऊनी कपड़े यानी नमदे के जूते) पहने थे और पिछले पैरों पर बूट पहने गए थे। यदि इन सब चीज़ों पर ध्यान ना दिया जाए तो वह एकदम असली हाथी नज़र आ रहा था। उसने चिंघाड़ते हुए पेड़ के चक्कर काटे, फिर विदा लेने के अंदाज़ में अपनी

सूंढ़ लहरायी और दोबारा झूमता हुआ दरवाज़े की ओर चल पड़ा। और दरवाज़े के पीछे, उस भूरे कपड़े के नीचे से इलेक्ट्रीशियन वोलोद्या और चौकीदार निकल कर सामने आए : वे दोनों ही तरह तरह की खुराफ़ात करन में माहिर थे। वे आवरण से निकल कर बाहर आए और वापस कमरे में लौट आए, जहाँ बच्चे उल्लास से ठहाके लगा रहे थे। उस शाम वहाँ कुछ और मनोरंजक चीजें भी हुई।

किसी बच्चे ने चिल्लाकर कहा:

- अब हम आँख पर पट्टी बाँध कर पकड़ने का खेल खेलेंगे।

व्लादिमीर इल्यीच ने अपना रुमाल निकाला और अपनी आँखों पर बाँध लिया। इलेक्ट्रीशियन वोलोद्या ने जल्दी से नववर्ष के पेड़ को एक किनारे कर दिया ताकि खेलने के लिए ज़्यादा जगह मिल सके।

लेनिन ने अपनी बाहें फैलायी और पंजे के बल आगे की ओर चलने लगे।

बच्चे चारों ओर बिखर गये। फिर उन्होंने चुपके से व्लादिमीर इल्यीच की ओर बढ़ना शुरू किया और चिल्लाए:

- गरम!

जब व्लादिमीर इल्यीच बहुत पास आ गए तो बच्चे चिल्लाए:

- आप जल जाएंगे!

जब वे एकदम करीब पहुंच जाते वे नीचे झुक जाते और लेनिन उन्हें पकड़ नहीं पाते, व उनके करीब से गुज़र जाते।

फिर बच्चे चीख़ उठते:

- ठण्ड, आप जम जाएंगे!

लेनिन समझ गए कि बच्चे बेहद चालाक और फुर्तीले थे, कि वे बेहद सावधानी से खेल रहे थे और ऐसे तो वह उन्हें कभी नहीं पकड़ पाएंगे।

तब उन्होंने दिखावा किया कि वे आगे की ओर चलेंगे लेकिन अचानक ही पीछे पलट गए और जो उनके हाथ पहले लगा उसी को पकड़ लिया।

खेल के अनुसार बच्चे चिल्ला उठे:-

- हमें बताइये कि यह कौन है!

लेनिन की पकड़ में आने वाला हंस रहा था और उनकी पकड़ से छूटने का प्रयास कर रहा था। यह सेनिया था।

व्लादिमीर इल्यीच ने उसके बालों को छुआ, उसके माथे और गालों पर उँगलियां फिरायीं और बोले :

- सेनिया!

सेनिया को दुख था कि वह पकड़ में आ गया, लेकिन उसे इस बात की खुशी भी थी कि लेनिन को उसका नाम याद था।

बाद में नन्हीं कात्या ने पुश्किन की एक कविता का पाठ किया लेकिन वह कुछ शब्द भूल

गयी और रोने लगी।

लेनिन ने उसे दिलासा दिया तो उसने रोना बन्द कर दिया, रुमाल से अपने आंसू पोंछे और कहा:

- लेनिन, आप हमारे साथ ही रहो। यहाँ से मत जाओ!

लेनिन हँस पड़े और बोले:

- मैं यहाँ से दूर नहीं रहता हूँ।

इसके बाद सभी ने नववर्ष के पेड़ के चारों ओर दौड़ना शुरू किया। नन्हीं कात्या व्लादिमीर के पीछे थी। उन्होंने उसका हाथ थामा हुआ था। उनके हाथ बहुत बड़े और गर्म थे। और ठीक इसी समय, नादेज़्दा कोन्सतान्तिनोव्ना क्रूप्स्काया और लेनिन की बहन, मारिया इल्यीच्ना उपहारों से भरी बड़ी-सी टोकरी लेकर वहाँ पहुँचीं। लेनिन ने ये तोहफ़े बच्चों के लिए मँगवाए थे। कुछ बच्चों को कार मिली, तो कुछ को तुरही (ट्रम्पेट) और ड्रम मिले। कात्या को एक गुड़िया मिली।

लेनिन चुपचाप कमरे से निकल गए और कार मैं बैठकर चले गए।

1919 में मास्को के बाहरी इलाके सोकोल्निकी में इस तरह मनाया गया था नए साल का उत्सव।

ए. कोनोनोव

साफ़ तश्तरियों की सोसायटी

सभी लोग चबूतरे पर लगी मेज के चारों कुर्सियों पर बैठ गए, इन तीन बच्चे थे, दो लड़कियां और एक लड़का। उन्होंने रूमाल लगाए और चुपचाप बैठकर सूप परोसे जाने का इंतज़ार करने लगे। व्लादिमिर इल्यीच उनकी ओर देखते रहे और वह बेहद प्यार से बात कर रहे थे। सूप परोस दिया गया। बच्चों ने सूप ठीक से नहीं पिया, सूप की उनकी तश्तरियां लगभग भरी हुई थीं। व्लादिमिर ने असहमति भरे अंदाज़ में उनकी ओर देखा लेकिन कुछ कहा नहीं। उसके बाद खाना आया। बच्चों ने फिर वैसा ही किया – दोबारा ज्यादातर भोजन उनकी तश्तरियों में छूटा हुआ था।

- उन्होंने तेज आवाज़ में बगल में बैठी नाद्या से पूछा, "क्या तुम लोग साफ़ तश्तरियों की सोसायटी के सदस्य हो?"

- "नहीं"। उसने आहिस्ता से जवाब दिया और हैरानी के साथ दूसरे बच्चों की ओर देखा।"

- क्या तुम हो?... और तुम?– उन्होंने लड़के और दूसरी लड़की से पूछा।

– नहीं, हम उसके सदस्य नहीं हैं! – बच्चों ने जवाब दिया।

— अरे, ऐसा क्यों?तुम अब तक उसके सदस्य क्यों नहीं बने?

- हमें इस सोसायटी के बारे में कुछ भी पता नहीं था! – वे जल्दी-जल्दी जवाब दे रहे थे।

- अफसोस! यह तो लंबे समय से मौजूद है।

- और हमें पता नहीं था! – नादिया ने निराश होकर कहा।

- हालांकि, तुम इस सोसायटी के अनुरूप नहीं हो। जो भी हो, तुम्हें इस सोसायटी में स्वीकार नहीं किया जाएगा, – व्लादिमीर इल्यीच ने सख्ती से कहा।

- क्यों?क्यों नहीं लिए जाएगा?– बच्चे एक-दूसरे की बात काटते हुए पूछ रहे थे।

- 'क्यों' का क्या मतलब है! ज़रा अपनी तश्तरियां तो देखो! वे तुम्हें कैसे स्वीकार कर सकते हैं, जबकि तुम अपनी तश्तरियों में खाना छोड़ देते हो!

- हम इसे अभी खत्म किए देते हैं!

और बच्चों ने अपनी तश्तरियों में बचा सारा भोजन खाना शुरू कर दिया।

-यदि तुम खुद को सुधार लो, तो हम कोशिश कर सकते हैं... इस सोसायटी में, तश्तरी में परोसा सारा भोजन खाने वालों को बैज दिया जाता है– व्लादिमीर इल्यीच ने अपनी बात जारी रखी।

- बैज! ... कैसे बैज? – बच्चे पूछ रहे थे – हम इस सोसायटी से कैसे जुड़ सकते हैं?

- तुम्हें एक आवेदन देना होगा।

- आवेदन किसे देना होगा?

- मुझे।

बच्चों ने मेज से उठने की अनुमति मांगी और तुरंत एक आवेदन लिखने के लिए दौड़ पड़े।

थोड़ी देर बाद वे चबूतरे पर लौटे और औपचारिक तरीके से व्लादिमीर इल्यीच को आवेदन सौंपा।

व्लादिमीर इल्यीच ने उसे पढ़ा, उसमें तीन गलतियां ठीक कीं और कोने में लिख दिया: "स्वीकार किया गया।"।

आई. बॉन्च : ब्रूएविच

सफ़ेद मशरूम

व्लादिमीर इल्यीच को मशरूम इकट्ठा करना बहुत पसंद था। एक दिन उन्होंने बच्चों के साथ जंगल जाकर मशरूम इकट्ठा करने का फैसला किया।

उस दिन बच्चे सुबह-सुबह जाग गए और अपनी टोकरियां लिए दौड़कर पार्क में पहुंचे, जहां उन्हें लेनिन से मिलना था।

वह एक शांत और चमकदार सुबह थी। पेड़ों की पत्तियों पर ओस की बूँदें पड़ी थीं, जिसकी वजह से वे काँच के हरे टुकड़ों की तरह चमचमा रही थीं।

- सेर्गेई ने कहा, "हम पहले आ गए। शायद, व्लादिमीर इल्यीच अभी तक सो रहे हैं।"

अचानक पीछे से लेनिन की आवाज़ सुनाई थी :

- मैं तुम्हारा ही इन्तज़ार कर रहा हूँ।

लेनिन अच्छे और प्रसन्न मूड में थे। एक सच्चे मशूरूम इकट्ठा करने वाले की तरह उनके कंधे पर एक भोजपत्र का थैला लटका हुआ था।

जिस घास के मैदान पर वे चल रहे थे वहाँ हर चीज़ सूर्योदय के साथ जाग गयी थी, और जीवंत हो उठी थी। सूरज की रोशनी से से जागे फूल पूरब दिशा की ओर झुक रहे थे, मधुमक्खियां की भिनभिनाहट सुनाई दे रही थी, अधखुले कुमुदिनी के फूल झील की सतह पर तैर रहे थे।

- "चलो प्रतिस्पर्द्धा करते हैं कि सबसे ज्यादा सफ़ेद मशरूम कौन इकट्ठा करता है", व्लादिमीर इल्यीच ने कहा।

- बच्चे खुशी से चहकते हुए बोले, "हां ठीक है प्रतिस्पर्द्धा हो जाए!" और चारों और बिखर गए। वे एक-दूसरे पर चिल्लाकर साथ रहने और रास्ता ना भटकने का आदेश दे रहे थे।

- हल्लो! मुझे एक सफ़ेद मशरूम मिल गया! - वेरा ने चिल्लाकर कहा।

- मुझे भी, - व्लादिमीर इल्यीच ने जवाब दिया और गुनगुनाते हुए कहा: हल्लोऽऽऽ!

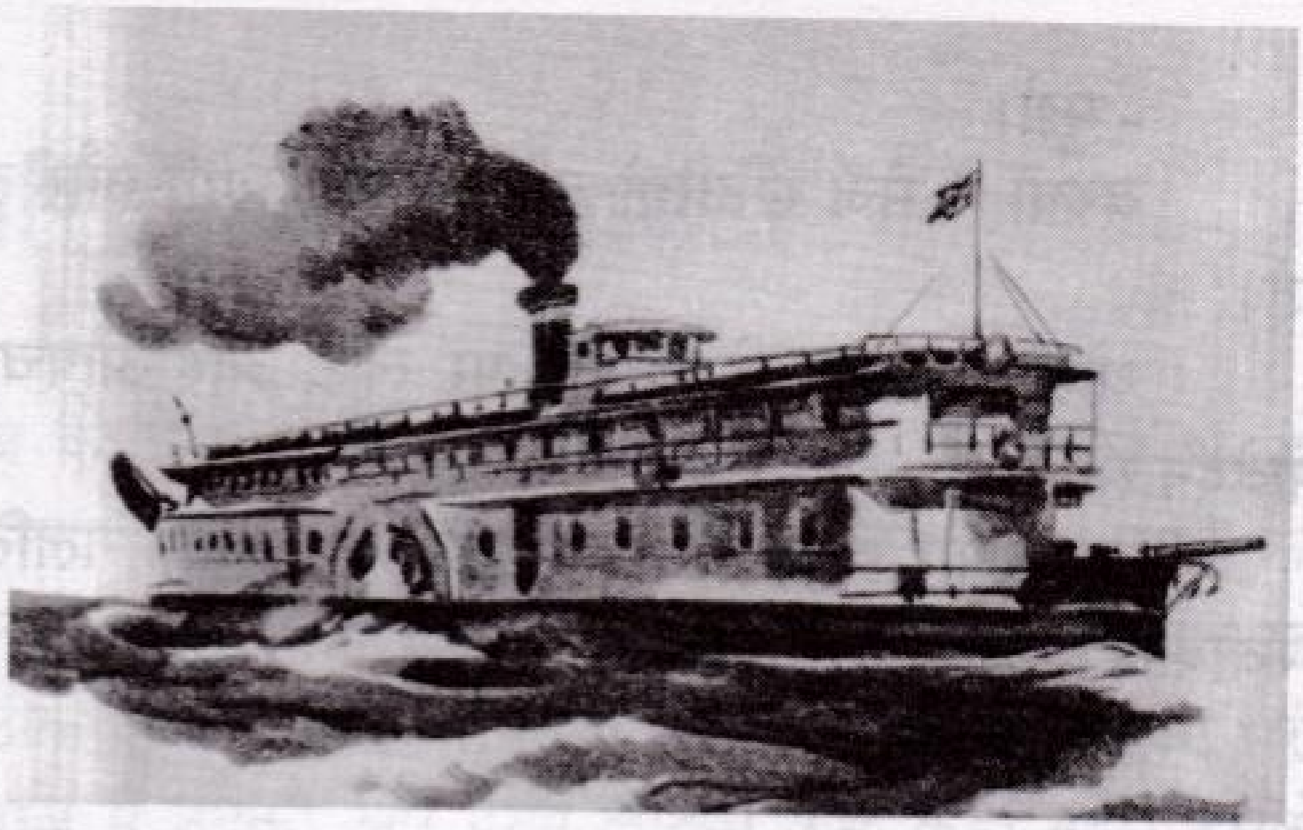

सेर्गेई लेनिन के पीछे-पीछे ही चल रहा था। व्लादिमीर इल्यीच को ढेर सारे सफ़ेद मशरूम मिल रहे थे।

- उन्हें जब भी नया मशरूम मिलता तो वह कहते, "अहा, हल्लो हीरो, अब चलो टोकरी में और दूसरों के साथ रहो।"

और वह मशूरूम को सावधानी के साथ जड़ के करीब से काट रहे थे।

सेर्गेई को एक भी सफ़ेद मशरूम नहीं मिला। उसने केवल शैंटरेल यानी पीले मशरूम ही इकट्ठे किए। और उन्हें इकट्ठा करना मुश्किल नहीं था क्योंकि वे हर जगह आपके पैर के पास ही होते थे।

- लड़कों में सबसे बड़े यूरा ने चिल्लाकर कहा, "मैं पांच मशरूम इकट्ठा कर चुका हूं!"

- इस पर वेरा ने दंभ से कहा, "और मेरे पास तो सात सफ़ेद मशरूम हैं," फिर वह दौड़कर लेनिन के पास आ गयी।

सेर्गेई चुप्पी साधे रहा क्योंकि कोई भी शैंटरेल ढूंढ़ने पर गर्व नहीं करेगा।

वे सब सपाट और चमकदार सनौबर के पेड़ों के बगीचे में मिले। बच्चे एक-दूसरे की बात काटते हुए अपने-अपने मशरूम लेनिन को दिखा रहे थे और लेनिन से कह रहे थे कि वे उनके सबसे अच्छे मशरूम - यानी मजबूत, मोटे डंढल वाले और लचीले भूरी टोपी वाले मशरूम - अपने लिए ले लें।

केवल सेर्गेई ही था जो चुपचाप किनारे में खड़ा था।

- बच्चे उसकी खिल्ली उड़ा रहे थे- अरे मशरूम इकट्ठा करने वाले, तुम्हें एक भी सफेद मशरूम नहीं मिला!

व्लादिमीर इल्यीच दुखी सेर्गेई के पास पहुंचे।

- अहा, तुम्हारी टोकरी तो पूरी भरी हुई है! - वे हैरान थे। तुमने अन्य सभी से ज्यादा मशरूम इकट्ठा किए हैं। क्यों लड़कों इसने ज्यादा मशरूम इकट्ठा किए हैं ना?

- हां, बिल्कुल, - सभी ने सहमति जताई।

- और ये शैंटरेल सबसे ज्यादा स्वादिष्ट मशरूम होते हैं। और मुझे इनमें से एक भी क्यों नहीं मिला? - उन्होंने कहा।

- सेर्गेई, चलो हम अदला-बदली करते हैं। मैं तुम्हें सफ़ेद मशरूम दूंगा और तुम मुझे शैंटरेल देना।

व्लादिमीर इल्यची ने पांच छोटे और अच्छे सफ़ेद मशरूम छांटे, जो उन मशरूमों से ज्यादा बेहतर थे जिनके बारे में बच्चे ढींग हांक रहे थे, और उन्होंने वे मशरूम सेर्गेई की टोकरी में रख दिए। सेर्गेई बिना किसी झिझक के अपने शैंटरेल लेनिन की टोकरी में पलट दिए, क्योंकि वे लेनिन थे।

- लेकिन इस अदला-बदली में वापसी की कोई गुंजाइश नहीं है, - लेनिन ने कहा और सभी लोग हंसने लगे।

उसके बाद सभी ने घास पर कुछ देर आराम किया और दोपहर में घर लौट चले।

वी. होचेन्को

लेनिन के बारे में बच्चों का गीत

हमारे प्यारे भले लेनिन दादा
देख रहे हैं हमें अपनी तस्वीर से:
किस तरह हम खेलते हैं और बनाते हैं तस्वीरें,
कितने खुश हैं हम अभी।
अभी हम हैं छोटे, हम हैं कमज़ोर,
लेकिन अब हम हो रहे हैं मज़बूत:
लेनिन दादा ने हमारा ख़्याल किया -
और मनाही कर दी कि हमें कोई दुख न दे।

एम. इसाकोव्सकी

लेनिन का लाइट बल्ब

शाम को जब बूढ़ा सवुर्बाई खेत से लौटा, तो बच्चों ने उसे घेर लिया। आज हमें अटारी पर एक पुरानी कैन मिली जिसमें से मिट्टी के तेल की गंध आ रही थी।

- वह क्या है, पापा?- लोबार ने पूछा।

-यह एक मिट्टी के तेल का लैंप है।

- क्या इसे जलाया जा सकता है?- लोबार ने पूछा

- सवुर्बाई ने जवाब दिया, - पहले इसे जा सकते थे, और इसे जलाने पर पूरे कमरे में कालिख छा जाती।

- तो उस समय हम इस लैंप को क्यों नहीं जलाते थे – लोबार ने पूछा और छत के नीचे लगे बिजली के बल्ब की ओर इशारा किया।

- सवुर्बाई ने कहा, "उस समय ऐसे बल्ब नहीं हुआ करते थे।"

- तब आपको यह कहां से मिला?

-यह में लेनिन ने दिया था।

- दादा लेनिन?

- हां, दादा लेनिन।

- लोबार ने अपनी पूछताछ जारी रखी – "नसीबा के बिस्तर के ऊपर लगा लैंप कहां से मिला?"

- वह भी दादा लेनिन ने दिया।

- और जो तुर्गुन के घर में जल रहा है, वह कहां से मिला?

- वह भी लेनिन ने दिया था।

- इसका मतलब है कि सारे बल्ब लेनिन ने दिए थे?– लोबार ने अपना प्रश्न दोहराया।

- हां, हमारे घरों को रौशन करने वाले सभी बल्ब दादा लेनिन ने दिए थे – सवुर्बाई ने आहिस्ता से कहा।

बच्चों ने अटारी में मिला मिट्टी के तेल का लैंप उठाया, उसे बाहर ले गए और कूड़ेदान में फेंक दिया। इसके बाद वे कमरे में लौट आए और दादा लेनिन द्वारा मिले उपहार यानी बिजली के बल्ब के नीचे किताब में बनी तस्वीरें देखने लगे।

– मिर्मुशिन

इस दुनिया में हम हैं ख़ूब ख़ुश

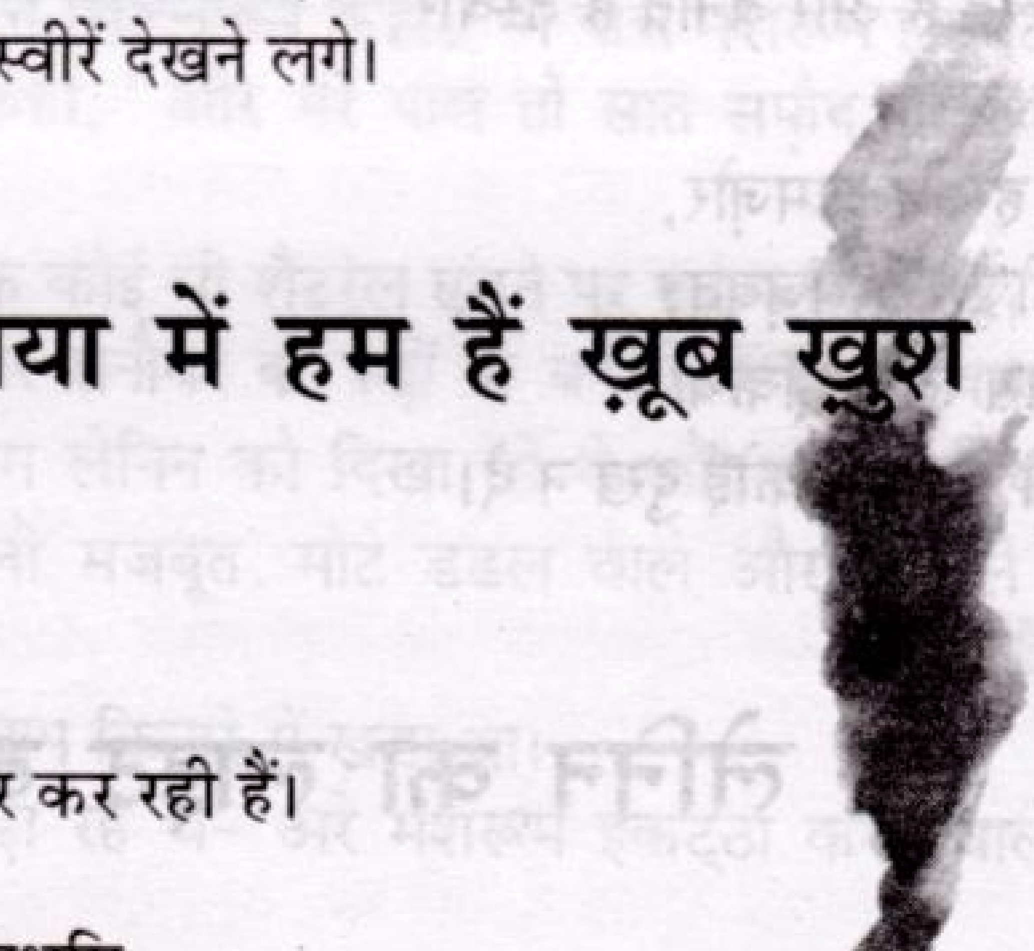

हम हैं खूब खुश इस दुनिया में
हम हैं लेनिन के परिवार के बच्चे।
मातृभूमि का सूरज चमक रहा है,
दुनिया की चौड़ी राहें हमारा इन्तज़ार कर रही हैं।

सबकुछ है हमारे लिए – हमारी मातृभूमि,
हरे–भरे बगीचे हैं चारों ओर...
पार्टी हमारी सबसे अच्छी दोस्त
करती है हमारी हिफ़ाज़त हरदम।

– एम. पोज्नान्स्काया

ISBN 818971916-5
9788189719166

अनुराग ट्रस्ट
लखनऊ